Cooperation, Co-ordination & Empowerment

गार्गी संवाद

त्रैमासिक पत्रिका

अंक एक

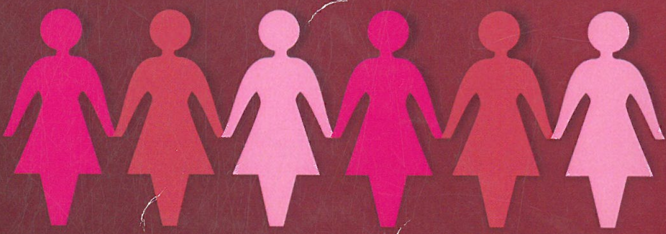

महिला अध्ययन केंद्र
शासकीय दूधाधारी बजरंग
कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय (स्वशासी)
कालीबाड़ी, रायपुर

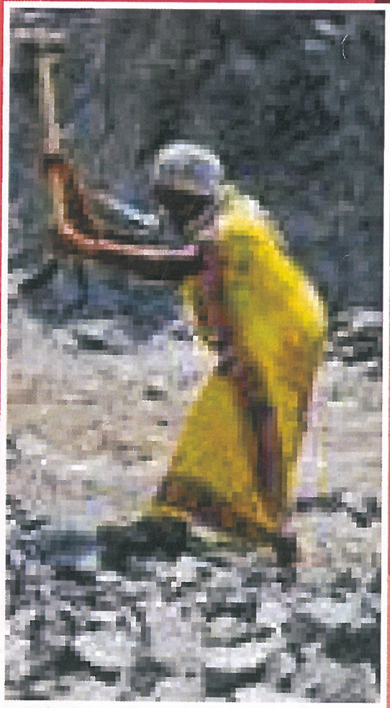

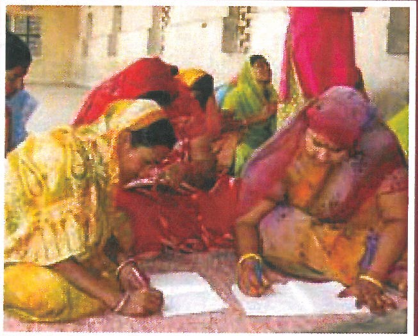

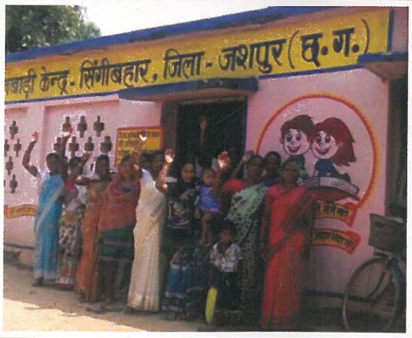

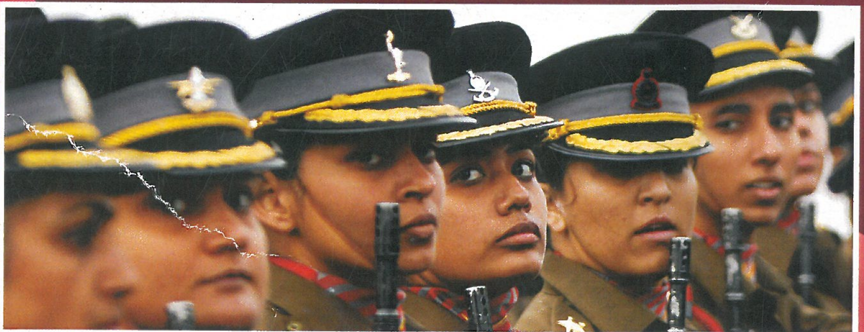

Inside

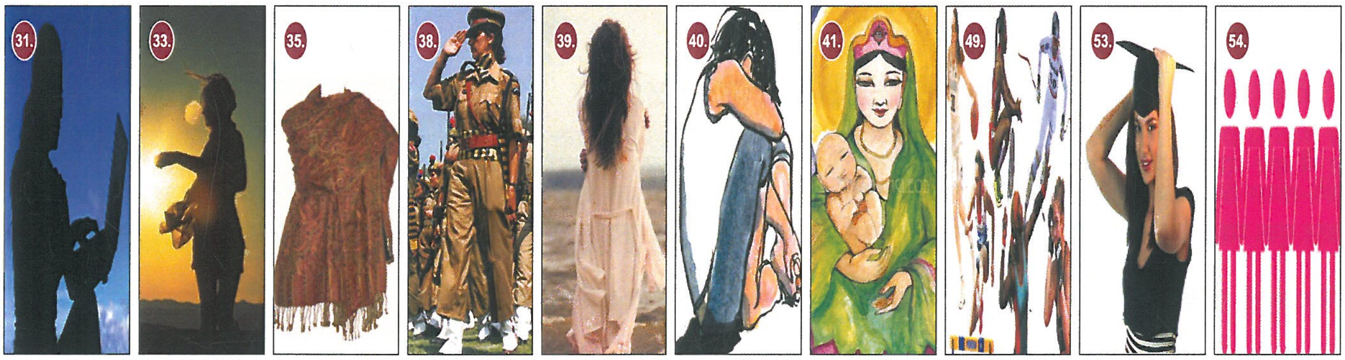

4. परवरिश का परिसंबल

6. महिलाओं से भेदभाव

9. महिला सशक्तिकरण

11. महिला कवियत्रियों की नारी दृष्टिकोण

15. My "Time of the Month"

16. NIOS के बढ़ते कदम

18. नारी दशा और दिशा

20. Recital of A Dusky Indian Woman

22. खेल महिलाऐं

23. बंधुत्व एवं सामाजिक सद्भाव

25. जेण्डर स्तरीकरण

31. WOMAN'S AGENCY THROUGH TECHNOLOGY

33. The Lost Blies

35. SHAWLS OF INDIA

38. देश को सलाम

39. दिल मेरा सूना है सूनी रैना है

40. Contemplation

41. नारी तू नारायणी

49. Women & Sports : An Overview From Nutritional Aspect

53. विकलांगता और शिक्षा

55. नारी एक सम्मान है

56. Contribution

जेण्डर स्तरीकरण : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

शोध सारांश

समाज के विकास क्रम को देखे तो प्रारंभ से ही असमानता के तत्व मौजूद रहे। कार्य विभाजन के आधार पर लैंगिक भेद रहा कि किस कार्य के लिए स्त्री ज्यादा उपयुक्त है और किस काम के लिए पुरूष सामर्थ्यवान है। इसी आधार पर पदों का बंटवारा किया गया। दोनों की सामाजिक स्थिति और कार्य क्षेत्र एक-दूसरे से बिल्कुल अलग थे और अपना-अपना काम करने के लिए स्वतंत्र थे। उन्हें किसी के क्षेत्र में दखल देने का अधिकार भी नहीं था।

धीरे-धीरे यही व्यवस्था स्तरीकरण के रूप में जानी जाने लगी। पारसंस ने अपनी कृति सामाजिक व्यवस्था में कहा है - ''सामाजिक स्तरीकरण से अभिप्राय किसी सामाजिक व्यवस्था में व्यक्तियों के ऊँच और नीच के पदानुक्रम से है।'' इस स्तरीकरण की व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति ने भी उच्चता एवं निम्नता की सोच को बढ़ावा दिया। प्रकृति ने स्त्री और पुरूष दोनों को एक-दूसरे का पूरक बनाया परन्तु सामाजिक व्यवस्था की सोच ने गैर बराबरी की स्थिति उत्पन्न की। इस जेण्डर स्तरीकरण को ही इस शोध पत्र में विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

शब्द कुंजी :-जेण्डर, स्तरीकरण, जेण्डर स्तरीकरण।

भूमिका

हम आज प्रगतिशील युग में इतने आगे बढ़ रहे हैं कि हर रोज सभ्यता व संस्कृति का नया इतिहास रचने लगे हैं। भौतिक प्रगति का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ हमने कदम न रखे हों। धरती और आसमान को एक करने में कोई कसर नहीं छोड़ी । परन्तु उसकी तुलना में हमारी सोच एवं मानसिकता विशालता के दायरे में पहुँच नहीं पाई। हम आगे तो बढ़ रहे हैं पर केवल बाहरी तौर पर। जिस देश के हम निवासी हैं, वह परम्परागत मूल्य, मान्यताएँ और रूढ़ियों से आबद्ध है। यदि हम चाहते हैं कि वैश्विक धरातल पर हमारी पकड़ तेज व गहरी हो तो वैचारिक क्रांति की जरूरत है। रामप्रकाश कुशवाहा (2008) ने सृजन संवाद मई, पे.88 में लिखा है - ''वर्तमान मनुष्य के विवेक के अतीतीकरण की सामाजिक प्रक्रिया को रोकने के लिए वैज्ञानिक जेहाद की जरूरत है, क्योंकि जिस तरह की सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था होगी, हमारा चिन्तन व व्यवहार भी वैसा ही होगा।''

एक लंबे समय से हम समानतावादी समाज के निर्माण के सपने देखते आ रहे हैं। जहाँ हर कोई बराबर होगा, चाहे वह आर्थिक आधार हो, राजनैतिक या सामाजिक आधार पर हो। इस दिशा में प्रयास भी चले कि व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर समानता केवल सिद्धान्त में न हो बल्कि धरातलीय स्तर पर समभाव को पोषित करे।

विकासशील दुनियाँ में इस दिशा में योजनाएँ, जन्मी, पनपी और पल्लवित होकर समाज को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ रहीं। विज्ञान और तकनीक ने संचार अभिव्यक्ति से मुखर और जागरूकता के रास्ते हमारे लिए खोल दिये है। परिणामस्वरूप उत्तर आधुनिकता के दरवाजे पर खड़े हम सामाजिक व्यवस्थाओं को नये सिरे से देखने व समझने लगे है। पहले हमारा समाज मुख्य रूप से दो स्तरों पर विभाजित था जाति और वर्ग। पर अब शक्ति धन प्रतिष्ठा उसमें जुड़े। आन्द्रे बेतई ने (Caste, Class and Power 1969 में) स्तरीकरण को जाति, वर्ग और शक्ति के संदर्भ में दक्षिण भारत के एक गांव श्रीपुरम् में अवलोकित व परिलक्षित किया।

अब उसमें शक्ति, धन और प्रतिष्ठा का जुड़ना समाज में असमान विभाजन का अच्छा उदाहरण माना जा सकता है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ऐंथोनी गिडिन्स, हेरालाम्बोस, टी.बी. बाटोमोर, दुबे, एफ. जी. वेली, पारसंस, के. डेविस, विल्बर्ट मूर, आदि ने अपने क्षेत्रीय अध्ययनों के आधार पर समाज में स्तर विभाजन की प्रक्रिया को देखा और परखा।

परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह देखने की आवश्यकता है कि स्तरीकरण से संबंधित जितने भी अध्ययन उपलब्ध हैं। उसमें स्त्रियों से जुड़ी स्तरों की पृथक व्यवस्था का कोई उल्लेख नहीं मिलता। समाज में व्यवस्था की आधारभूत कड़ी स्त्री और पुरूष होते है। भारतीय परिवेश तो अभी भी परम्पराओं से जकड़ा है। पितृसत्तात्मक स्तर की उच्चता में हमारी सारी सोच को सीमाओं में बांध रखा है। स्तरीकृत समाज में उच्चता व निम्नता की भावना ने पितृसत्ता को ही सर्वोपरि माना है। शक्ति, धन और प्रतिष्ठा को आधार मानें तो जेण्डर स्तरीकरण में पुरूष प्रमुख हैं और उच्च स्तर पर है।

अध्ययन का उद्देश्य

हम जिस देश व समाज में रहते हैं उसका एक परम्परागत ढांचा है जिन पर ही मनुष्यों की स्थिति, मूल्य, मान्यतायें और रूढ़ियाँ आधारित होती हैं। महिलाओं के स्तरीकरण का आधार जैविकीय न होकर सामाजिक सोच है जो हमारे चरित्र एवं व्यवहार में परिलक्षित होता है। आखिर यह सामाजिक सोच जो जेण्डर पर आधारित है, आज किस रूप में दिखाई दे रही है और उसका क्या परिणाम हमें देखने को मिल रहा है ? इस शोध पत्र के माध्यम से द्वैतीयक तथ्यों के आधार पर यही विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में जेण्डर एवं सामाजिक स्तरीकरण से संबंधित द्वैतीयक तथ्यों पर विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा तथ्यों की विश्लेषण एवं विवेचना की गई है।

पूर्व शोध अध्ययन

इस चयनित विषय पर कुछ अध्ययन प्राप्त हुए है -कमला भसीन (2000), दोषी एवं जैन (2000), अरूणा कुमारी सिंह (2003), रवीन्द्रनाथ प्रेमानिक एवं असीम कुमार अधिकारी (2006), शशांक शोवर पाल (2006), गोपालचन्द्र डे (2006), देवाशीष सरकार (2006), आशा मुखर्जी (2006), वंदना गौड (2009), कृपा गौतम (2010), वी.एन. सिंह एवं जनमेजय सिंह (2010), शर्मा के.एल. (2011), मधुसूदन एवं आदर्श कुमार (2012), आदि शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययनों में जेण्डर तथा इस पर आधारित स्तरीकरण को महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में विवेचित करने का प्रयास किया गया।

जेण्डर स्तरीकरण - विश्लेषण

भारतीय समाज में स्तरीकरण शारीरिक नहीं बल्कि सामाजिक विषमताओं और गैर बराबरी के आधार पर दिखाई देता है। इसे समझने से पूर्व कुछ संप्रत्ययों की व्याख्या आवश्यक है।

जेण्डर स्तरीकरण : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

स्तरीकरण

सामान्य रूप से सामाजिक समूहों का कुछ स्तरों में बंटना स्तरीकरण कहलाता है। वस्तुतः समाज में भौतिकता के आधार पर संरचनात्मक रूप से असमान स्थिति दिखाई देती है। अर्थात् शक्ति एवं धन के आधार पर मनुष्यों के समूहों का कुछ श्रेणियों में विभाजन स्तरीकरण है। इसे कई विद्वानों ने अपने ढंग से परिभाषित किया है। वर्ग के आधार पर प्रतिष्ठा शक्ति तथा धन है जो लोगों को उच्चता एवं निम्नता के आधार पर बांटता है। प्रकार्यवादियों, मार्क्सवादियों ने गैर बराबरी तथा श्रम विभाजन के आधार पर स्तरीकरण को समझाने का प्रयास किया है। इतिहासकारों ने चार व्यवस्थाओं - दासता, जागीर, जाति एवं वर्ग के आधार पर स्तरीकरण को स्पष्ट किया है। माइकल मान(2002) ने **Persons, Households, Families, Lineages, Genders, Classes & Natios**, में कहा है कि सामाजिक स्तरीकरण के लिये तीन बातें आवश्यक हैं :- वर्ग, स्थिति और शक्ति, जो हमारी संरचना में दिखाई देती है।

जेण्डर

जेण्डर शब्द पुरूष व महिलाओं के लिए कुछ स्थापित व्यवहारों को इंगित करता है, जो व्यक्ति अपने बड़े होने की प्रक्रिया में सीखता है। यह एक सामाजिक सांस्कृतिक धारणा है, जिसका संबंध पुरूषोचित और स्त्रियोचित गुणों, व्यवहारों के तरीकों और भूमिकाओं आदि से होता है। यह परिवर्तनशील धारणा है, जो समय संस्कृति के साथ यहाँ तक कि एक परिवार से दूसरे परिवार में बदल सकता है। ऐन ओकली (1972) ने **Sex Gender & Society** में कहा है कि ''जेण्डर का संबंध संस्कृति से है। उसका तात्पर्य उन सामाजिक श्रेणियों से है, जिनमें मर्द व औरतें, पुरूषोचित और स्त्रियोचित रूप ले लेते हैं।'' हमारे समाज में यह साधारण धारणा है कि सेक्स व जेण्डर एक ही है। पर्यायवाची शब्दों के रूप में ये दोनों शब्द अलग-अलग प्रयोग में लाये जाते हैं।

वस्तुतः दोनों ही अलग है। सेक्स जन्म के समय, प्रकृति शिशु को प्रदान करती है। हर कोई मादा या नर के रूप में पैदा होता है। इस तरह सेक्स की पहचान जननांगो को देखकर की जाती है। 'जेंडर' वह है जो समाज द्वारा शिशु को प्रदान किया जाता है, अर्थात् इसके द्वारा यह तय किया जाता है कि नर व मादा शिशु का व्यवहार कैसा होना चाहिये। एक दूसरे के पूरक अंग के रूप में प्रकृति ईश्वर का निमित्त बनती है। फिर समानता व असमानता की स्थिति कहाँ से आती है। जाहिर है यह समाज ही है जो उनके अन्दर स्त्रीत्व व पुरूषत्व का निर्माण करता है। यही भाव आगे चलकर समाज में स्तरीकरण की व्यवस्था में बदल जाता है जिसका आधार होता है व्यवस्था व सोच के अनुरूप उच्च और निम्न स्थिति। कहने का अर्थ है कि 'सेक्स' प्राकृतिक व्यवस्था है जिसका सामाजिक रूप जेंडर है। इन दोनों में कुछ मूलभूत अंतर इस तरह बताये जा सकते हैं -

जेण्डर स्तरीकरण : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

सेक्स	जेंडर
सेक्स जैविकीय या शारीरिक है।	जेंडर सामाजिक व सांस्कृतिक है।
शारीरिक जननांगों का फर्क है।	पुरूषोचित व स्त्रियोचित गुण व व्यवहार का तरीका है।
प्रकृति प्रदत्त है।	समाज प्रदत्त है।
सेक्स स्थायी एवं अपरिवर्तनशील है।	जेण्डर अस्थायी एवं परिवर्तनशील है।

अतः जेण्डर की अवधारणा स्त्रियों और पुरूषों के बीच सामाजिक रूप से निर्मित भिन्नता के पहलुओं पर ध्यान आकर्षित करती है। परन्तु आज जेण्डर सीमित अर्थों में सांस्कृतिक आदर्शों जिसमें स्त्रीत्व गुण और पुरूषत्वगुण निहित हों जैसी रूढ़िबद्ध धारणाओं के साथ लैंगिक विभाजन के रूप में लिया जाने लगा है।

इस तरह जेण्डर शाब्दिक रूप से जैविकीय अर्थ की ओर संकेत करता है परन्तु यह है सामाजिक धारणा। हर समाज में गुण होते हैं जिन्हें या तो पुरूषोचित कहा जाता है या स्त्रियोचित। नारीत्व व पुरूषत्व का निर्धारण तो हमारी संस्कृति ही करती है। जो कि पालन पोषण की प्रक्रिया से विकसित होती है। जैसे लड़का रोता है तो माँ कहती है कि क्या लड़की की तरह रो रहा है मानो रोना केवल महिला के हिस्से में हो। इसलिए कहा भी जाता है औरत पैदा नहीं होती, बना दी जाती है, अर्थात् जेण्डर का सीधा संबंध सामाजिक व्यवस्था से है।

जेण्डर स्तरीकरण

समाज में पूर्व में जो कार्य विभाजन था उसके पीछे प्रकृति एवं जैविकीय असमानता नहीं थी, बल्कि यह मान्यता थी कि शारीरिक रूप से तथा प्रजनन क्षमता के कारण भारी श्रम के लिए महिलाएँ उपयुक्त नहीं है। महिलाओं के इन कठिन कार्यों को पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने सरल व कम आंकना शुरू कर दिया। उनकी यह स्थिति जैविकीय नहीं थी, और प्रकृति से भी प्राप्त नहीं थी बल्कि सामाजिक व्यवस्था का परिणाम थी। इस तरह जब हम जेंडर को सामाजिक स्तरीकरण की प्रक्रिया के संदर्भ में देखे तो असमानता की स्थिति स्पष्ट दिखाई देती है। इसकी जड़ हमारी सामाजिक व्यवस्था की गहराई में है, जो कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था है। प्राचीन काल में खाद्य संग्रहण और आखेट स्तर पर स्त्रियों की तुलना में पुरूषों की भूमिका महत्वपूर्ण थी। जो आगे चलकर दृढ़ रूप से स्थापित हो गई। पुरूषों द्वारा शक्ति सामर्थ्य के कार्य संपादित किये जाने लगे और स्त्रियों द्वारा कार्य क्षेत्र घर की चहारदीवारी तक सीमित होते चले गये।

इस निजी क्षेत्र अर्थात् गृहस्थी की दुनियाँ में स्त्री अपने परिवार, बच्चे और घर के काम काज में संलग्न होती गई तथा पुरूष बाहर की सार्वजनिक दुनियाँ में निर्णय लेने लगा कि धन, शक्ति का बंटवारा कैसे किया जाय। स्त्री की स्थिति पुरूष की शक्ति, धन और प्रतिष्ठा से आंकलित की जाने लगी। पति उच्च अधिक संपन्न और प्रतिष्ठित है तो पत्नी का स्थान भी वहीं होता गया। यही है जेण्डर स्तरीकरण। जॉन गोल्डथ्रोप का कहना है कि ''आज स्त्रियाँ चाहे ऊँची नौकरी पर चली जाय उनके स्तरीकरण में उनका स्थान उनके पति के साथ ही जुड़ जाता है और इस कारण स्त्रियों का वर्ग भी वही वर्ग समझा जाना जाय जो उनके पति का है।'' उनका कहना है कि ''जब स्त्रियाँ निम्न धंधो में काम करती हैं तो स्तरीकरण में उनका स्थान निम्न हो जाता है।

जेण्डर स्तरीकरण : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

सच्चाई यह है कि अधिकतर स्त्रियाँ आर्थिक दृष्टि से अपने पति पर निर्भर हैं और यदि हम इस तथ्य को स्वीकार कर लें तो कहना होगा कि स्त्रियों की वर्ग स्थिति उनके पति की वर्ग स्थिति पर निर्भर है। लिंग के आधार पर बने संबंध स्तरीकरण में नहीं बल्कि संरचना में विद्यमान होते हैं क्योंकि महिलाओं की स्थिति उनके पुरूष की स्थिति से पहचानी जाती है। यही उनकी अधीनस्थ स्थिति है जो स्त्रियोचित या पुरूषोचित गुणों के द्वारा आंकी जाती है। जिसे हमारी पितृसत्तात्मक और जाति व्यवस्था ने पोषित किया है। यदि कोई महिला अपनी स्थिति में प्रगति करती है तो उसका श्रेय उनके माता-पिता या पति को दिया जाता है अर्थात् उनका विकास पितृसत्तात्मक व्यवस्था के संबंध में आंकलित किया जाता है।

यह जेण्डर स्तरीकरण उन महिलाओं के तमाम विकास के बावजूद उन्हें द्वितीयक स्थिति पर ही रखता है जो देश, राष्ट्र, समाज और परिवार में हमें दिखाई देता है। लिंग भेद तो फिर भी ठीक है परन्तु जेण्डर स्तरीकरण वैचारिक प्रदूषण को पोषित करता है। जहाँ एक पुरूष को मनुष्य और महिला को स्त्री के रूप में नामांकित किया जाता है। इससे दोनों लिंगों के साथ उच्चता व निम्नता का मूल्य भाव जुड़ जाता है। यह दोहरी स्थिति सभी के विकास के लिये बाधक होती है। लिंग भेद पूरी तरह जैविकीय और शारीरिक है। माइकल मॉन ने लिखा है कि ''स्त्री को सदैव ऐसे परिभाषित किया जाता है जो मनुष्य नहीं है, वह (स्त्री) मनुष्य शेष है, उसको इन विशेषताओं द्वारा परिभाषित किया जाता है जिसका उसमें अभाव है।'' यही जेण्डर भेद पितृसत्ता के प्रबल स्थायित्व का आधार है। जो असमानता और गैर-बराबरी पहले थी वह अब भी है, और नये रूप में है। महिलायें तब भी अपनी उपलब्धि के बावजूद द्वैतीयक थी और आज भी जेण्डर भेद का शिकार है।

आज जेण्डर स्तरीकरण को नये सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता है। रोजमर्रा के जीवन में जेण्डर भाव खत्म करना होगा। विकास के संसाधनों में शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य के क्षेत्र में पुरूषों के समान महिलाओं को भी स्वामित्व और नियंत्रण का अधिकार प्रदान करना होगा। आज कई देशों में जेण्डर स्तरीकरण को लेकर काफी कुछ सोचा, समझा और लिखा जा रहा है। क्षेत्रीय अनुसंधान के आधार यह प्राक्कल्पित हो रहा है कि स्तरीकरण की व्यवस्था में स्त्रियों का स्थान भी वही होता है जो उनके पिता या पति का होता है। हमारे देश में भी इस दिशा में काफी कुछ घट रहा है, उसके पीछे उद्देश्य भी वही है कि जेण्डर स्तरीकरण में गैर-बराबरी न हो उन्हें भी पुरूषों के बराबर रखा जाय। चाहे शहर हो, या गाँव, हर जगह चेतना की लहर जरूर बह रही है जो बार-बार इस बात पर जोर दे रही है कि प्रकृति ने स्त्री पुरूष को एक-दूसरे का पूरक बनाया तो यह गैर बराबरी कहाँ से पनपी।

यूरोप और अमरीका जैसे कुछ देशों में जेण्डर जागरूकता की लहर दिखने लगी है। कुछ अध्ययन भी इस दिशा में किये जा रहे है। इस लहर का कुछ परिणाम भी नजर आने लगा है। मसलन शिक्षा में बच्चे के पिता के साथ माता के नाम की अनिवार्यता, जमीन के स्वामित्व में पुरूष के साथ स्त्री का नाम दर्ज किये जाने की स्थिति जेन्डर स्तरीकरण में बदलाव का सूचक कहीं जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भसीन, कमला (2002) भला यह जेण्डर क्या है? मुद्रण : नई दिल्ली।
2. दोषी एवं जैन (2000) समाजशास्त्र नई दिशाएँ : नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर।
3. गौतम कृपा (2010) भारतीय स्त्री : लिंग अनुपात एवं सशक्तिकरण मिश्रा पब्लिशर एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर दिल्ली।
4. गॉड, वंदना (2009) ''आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में लिंग के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण'' समाज कल्याण वर्ष 54 अंक 8, मार्च पेज-10-11
5. Pramanik, Ravindra Nath & Adhikary, Ashim Kumar (2006)Gender Inequality and Womans EmpowermentAbhijeet publication, Delhi.
6. सिंह अरूण कुमारी (2003) ''जेण्डर की अवधारणा : एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण'' रिसर्च लिंक, वर्ष-2, अंक-8, सितम्बर नवम्बर पेज 50, 64
7. सिंह, वी.एन. एवं जनमेजय (2010) आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. शर्मा के.एल. (2011) सामाजिक स्तरीकरण, रॉवत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
9. Russ, Long (2013) Institutional Discrimination Gender Stratification.
10. त्रिपाठी, मधुसूदन एवं आदर्श कुमार (2012) लिंगीय समाजशास्त्रओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली

डॉ. सुचित्रा शर्मा
शा.वि.या.ता.स्व.स्नात.महा., दुर्ग
डॉ. अमरनाथ शर्मा
इन्दिरागाँधी शा.महा. वैशालीनगर, भिलाई